RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –II GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES

Unit-I - **ADMINISTRATIVE ETHICS**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. तनाव प्रबंधन का बेहतर तरीका कौनसा है और क्यों? संक्षेप में समझाइये?

उत्तरः– तनाव प्रबंधन का सर्वश्रेष्ठ तरीका कॉपिंग व्यवहार अर्थात् समस्या का सामना कर हल प्राप्त करना है। क्योंकि यह तनाव को स्थायी रूप से कम किया जा सकता है।

2. राजनैतिक मनोवृत्ति से आप क्या समझते है?

उत्तरः– सार्वननिक क्षेत्र के प्रति व्यक्तियों की मनोवृत्ति राजनैतिक मनोवृत्ति कहलाती है। उदाहरणार्थ अतिवादी, उदारवादी, प्रतिक्रियावादी आदि।

3. गाँधी जी के अनुसार सर्वोदय की अवधारणा के नैतिक पक्ष को समझाइये।

उत्तरः– गाँधी जी ने साधन व साध्य दोनों की पवित्रता पर बल दिया। गाँधी मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नैतिक नियमों के एकादश व्रत की पालना की बात करते है।

4. ऋत को परिभाषित कीजिए?

उत्तरः– ऋत का आशय व्यवस्था के उस नियम से है जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड संचालित होता है, इसका शाब्दिक अर्थ उचित व नैतिक सद्मार्गी है।

5. स्वधर्म से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः– वेदव्यास विरचित गीतानुसार वर्णाश्रम के अनुरूप निर्धारित कर्मों/ कर्त्तव्यों का सम्यक रूप से पालन करना ही स्वधर्म है अर्थात् इसका आशय स्वयं के स्वभाव व गुणों पर आधारित कर्म को कुशलता से करने से है।

6. सुकरात के अनुसार सद्गुण क्या है? समझाइये।

उत्तरः– ग्रीक दार्शनिक सुकरात के अनुसार सद्गुण ज्ञानरूप, वस्तुनिष्ठ, अविभाज्य, एकताबद्ध व शिक्षणीय है। बौद्धिक सुख की प्राप्ति, आत्मा का नैतिक विकास व चारित्रिक उत्कृष्टता का परिमाप सद्गुण है।

7. काण्ट के नैतिक सिद्धान्त का मूल्यांकन कीजिए?

उत्तरः– काण्ट का समीक्षावाद, बुद्धिवाद व अनुभववाद के सकारात्मक पक्षों का समन्वय है, जिसे भावनात्मक तत्वों व अपवादों को नकारने के कारण अत्यधिक कठोर माना जाता है।

8. ऋत को नैतिक सम्प्रत्यय क्यों मानते है?

उत्तरः– ऋत नैतिक संप्रत्यय है क्योंकि ये वे नियम है जिसमें नैतिक व्यवस्था संचालित होती है व संपूर्ण ब्रह्माण्ड में नैतिकता का विकास होता है।

9. तीन प्रकार के ऋणों से मुक्त होकर व्यक्ति क्या प्राप्त कर सकता है।

उत्तरः– वैदिक परम्परा के अनुसार तीन प्रकार के ऋणों से मुक्त हो कर अर्थात् अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कर के व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है।

10. कर्त्तव्य की अवधारणा को समझाइए।

उत्तरः– नैतिक नियमों के प्रति सम्मान की भावना से प्रेरित होकर उन्हीं नियमों के अनुरूप कर्म करने की अनिवार्यता कर्त्तव्य कहलाती है। काण्ट के अनुसार इनके दो प्रकार पूर्ण बाध्यता संबंधी कर्त्तव्य एवं अपूर्ण बाध्यता संबंधी कर्त्तव्य है।

11. शुभ और अशुभ में क्या अन्तर है?

उत्तरः– नैतिक दृष्टि से उचित अर्थात् अच्छा कर्म शुभ कहलाता है जबकि नैतिक दृष्टि से अनुचित अर्थात् बुरा कर्म अशुभ कहलाता है।

12. तनाव के विभिन्न लक्षण कौन–कौनसे है?

उत्तरः– अधीरता, चिंता, चिड़चिड़ापन, असहनशीलता, क्रोध, एकाग्रता में कमी, भूलना, संशय, साँस फूलना, सिरदर्द, जलन, मांसपेशियों में खिंचाव जैसे लक्षण तनाव को प्रकट करते है।

13. अभिवृत्ति एवं अभियोग्यता में क्या अंतर है?

उत्तरः-

अभिवृत्ति	**अभियोग्यता**
किसी सार्थक वस्तु/घटना अथवा प्रतीक के प्रति व्यक्ति के स्थायी विश्वास, भाव व व्यवहार प्रवृत्ति का संगठन अभिवृत्ति है।	किसी क्षेत्र विशेष में व्यक्ति के विशिष्ट ज्ञान व भविष्य में कार्य निष्पादन की संभावना का संयोग अभियोग्यता है।

14. मूल्य सार्वभौमिक होते है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः- मूल्य जीवन में उद्देश्यों व प्रयुक्त साधनों के मानदण्ड होते है, अतः संपूर्ण विश्व में सार्वभौम रूप से उपस्थित होते है किन्तु इनकी प्रवृत्ति सार्वभौमिक नहीं होती। उदाहरण- विवाह सार्वभौमिक किन्तु प्रक्रिया सार्वभौमिक नहीं।

15. अधिनीतिशास्त्र से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः- तार्किक भाववाद पर आधारित आधुनिक नीतिशास्त्र जिसमें नैतिक शब्दों के सटीक विश्लेषण, अर्थ के स्पष्टीकरण व तर्कपूर्ण अध्ययन पर बल दिया गया। वहीं सत्य होगा जो विश्लेषणात्मक हो व अनुभव द्वारा सत्यापित हो, उदाहरण- ईमानदारी।

16. नैतिकता व नीतिशास्त्र में क्या अंतर है?

उत्तरः-

नैतिकता(उत्पत्ति-मूर/परंपरा)	**नीतिशास्त्र (उत्पत्ति-इयोस/चरित्र)**
व्यक्तिगत आंतरिक स्त्रोत	सामाजिक बाह्य स्त्रोत
निजी व्यवहार से संबंधित	सार्वजनिक व्यवहार से संबंधित
व्यावहारिक पक्ष से संबंधित	सैद्धान्तिक पक्ष से संबंधित

17. नैतिक मूल्यों के पोषण में समाज का क्या महत्त्व है?

उत्तरः-सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति समाज से सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को प्राप्त करता है, उससे तादात्म्य स्थापित करता है व उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।

18. राजस्थान के किन्ही तीन प्रशासकों के नाम व कार्य बताइये। जिन्होने प्रशासन में नैतिकता को प्राथमिकता दी है?

उत्तरः- श्री जितेन्द्र सोनी- वंचित बच्चों को जूते उपलब्ध करवाने हेतु 'चरण पादुका'
श्री ए.टी. पेडनेकर- आनलाइन शिक्षा-प्रोजेक्ट उत्कर्ष
श्रीमति मंजू राजपाल- बालिकाओं के उत्थान हेतु कार्य, 3 बालिकाएँ गोद ली।

19. केस स्टडी को हल करते समय किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

उत्तरः- समस्या को उचित रूप से परिभाषित करना चाहिए।
अनिवार्य तथ्यों को एकत्र करना चाहिए।
संभावित विकल्पों को पहचान कर मूल्यांकन करना चाहिए।
सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन करना चाहिए।

20. नैतिक दुविधा किसे कहते है?

उत्तरः-एक से अधिक विकल्प उपस्थित होने पर प्रतिस्पर्धा विकल्पों में से सर्वाधिक नैतिक विकल्प के चुनाव में मूल्य संघर्ष के कारण उत्पन्न असमंजस्य की स्थिति नैतिक दुविधा है।

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 5 अंक निर्धारित है।

21. मूल्यों के निर्माण व संरक्षण में परिवार की भूमिका पर टिप्पणी करें?

उत्तरः-परिवार व्यक्ति व समाज के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है। परिवार एक लघु पाठशाला है, जहाँ से बालक अपने माता-पिता व परिवारजनों के क्रिया-कलापों व अनुभवों से सीखता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चार वर्ष तक की आयु में बालक का व्यक्तित्व व दृष्टिकोण अपना स्वरूप लगभग प्राप्त कर लेता है। यह वह समय है जब बालक द्वारा जीवन में मूल्यों के प्रयोजन को समझने उनके स्पष्टीकरण व स्वीकार करनें में माता-पिता व परिवारजनों की आधारभूत भूमिका होती है। इस प्रकार मूल्यों के निर्माण व संरक्षण में परिवार की केन्द्रीय भूमिका है।

22. भावनात्मक बुद्धि(EI), बौद्धिक गुणक(IQ) की तुलना में अधिक मायने क्यों रखती है। क्या प्रशासन में भावनात्मक बुद्धि(EI) की आवश्यकता हैं?

उत्तरः–गोलमेन के अनुसार व्यक्ति की सफलता में 20% योगदान बुद्धि लब्धि का एवं 80% योगदान भावनात्मक बुद्धि का होता है। भावनात्मक बुद्धि, वह क्षमता है जो प्रशासक को आत्म जागरूक एवं आत्म प्रबंधित बनाती है, अतः इसके माध्यम से प्रशासन में सत्यनिष्ठा, परिवर्तन की स्वीकार्यता एवं स्व नियंत्रण का समावेश होता है। साथ ही भावनात्मक बुद्धि आत्म प्रेरणा के माध्यम से प्रशासन को लक्ष्योंन्मुखी बना कर अवसरों की ग्रहणशीलता में वृद्धि करती है। सामाजिक जागरूकता एवं संबंध प्रबंधन प्रशासन में कुशल नेतृत्व, समूह भावना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा व सकारात्मक कार्य-वातावरण को विकसित करने हेतु अनिवार्य है।

23. आप भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के अधिकारी है। अन्याय को आप किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं करते हैं, **(केस स्टडी)**

उत्तरः– एक भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी का दायित्व क्षेत्र में निष्पक्ष रूप से कानून व्यवस्था व शांति बनाए रखना है। उपर्युक्त परिस्थिति से संज्ञान होता है कि क्षेत्र में सांप्रदायिक तनाव व्याप्त है एवं दंगों को नियंत्रित करने के लिए त्वरित कार्यवाही की आवश्यकता है। उच्चाधिकारियों व नेताओं द्वारा अनैतिक दबाव की स्थिति में उनसे लिखित आदेश की मांग की जाएगी जो कि नियम विरूद्ध होने के कारण संभव नहीं होगा व इस समयान्तराल में दोनों पक्षों के प्रभावी नेताओं से बातचीत कर मामले को शांत करने का प्रयास किया जाएगा व वस्तुनिष्ठता व तटस्थता का पालन करते हुए संपूर्ण घटनाक्रम से अवगत होने के पश्चात् साक्ष्यों के आधार पर दोषियों के विरूद्ध कार्यवाही कर के स्थिति को नियंत्रित किया जाएगा।

24. आप एक राज्य में जिलाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं, अपने दो बच्चों और पत्नी के साथ आप अपने सरकारी कार्यालय के बगल में ही सरकारी आवास में रहते हैं। आपके मित्र आशुतोष जो कि बगल वाले जिले में भारतीय पुलिस सेवा के अन्तर्गत पुलिस अधीक्षक (एसपी) के पर पर कार्यरत हैं। एक-दूसरे से मिलने-जुलने का कार्यक्रम भी लगा रहता है। आपके जिले में सर्वत्र भ्रष्ट गतिविधियाँ व्याप्त हैं, इस बात की जानकारी आपको बखूबी है।**(केस स्टडी)**

उत्तरः– परिस्थिति से संज्ञान होता है कि मित्र की पत्नी की बहन भ्रष्टाचार के अपराध की दोषी है। एक जिलाधिकारी के पद पर होने के नाते प्रशासन में वस्तुनिष्ठता, ईमानदारी व सत्यनिष्ठता का समावेश करने हेतु मित्र की पत्नी की बहन समेत सभी भ्रष्टाचारियों पर समान कार्यवाही की जाएगी। साथ ही मित्र को स्थिति से अवगत करवाया जाएगा। मित्र भी प्रशासन का भाग है अतः निश्चिय ही वह परिस्थिति को समझ सकेगा व पत्नी की बहन को भविष्य में ऐसी अपराध न करने को बाध्य करेगा। इस प्रकार मित्रता व सत्यनिष्ठता दोनों को बचाया जा सकेगा।

25. किन्ही तीन भारतीय समाज सुधारकों के नाम व उनके जीवन से प्राप्त शिक्षा का महत्त्व बताइए।

उत्तरः–1. राजा राममोहन राय – इन्होंने ईश्वर के एकत्व का उपदेश दिया व धार्मिक आडम्बरों का खण्डन करते हुए स्त्री अधिकार व शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

2. महर्षि दयानंद सरस्वती – जाति प्रथा व मूर्ति पूजा का विरोध किया व विश्व को वेदों की महत्ता से परिचय करवाया।(वेदो की ओर लौटो)

3. स्वामी विवेकानन्द – मानवता को सर्वोदय धर्म बताया, विश्व में हिन्दू धर्म की पहचान (तार्किक विवेचन द्वारा), धर्मो के समन्वय में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

26. ''सत्य और अंहिसा किस प्रकार साध्य एवं साधन है'' टिप्पणी कीजिए?

उत्तरः– गाँधी मतानुसार सत्य व अहिंसा अवियोज्य है। अहिंसा आत्मिय बल का प्रतीक है। यह वह नैतिक व आध्यात्मिक बल है जिससे मानव के हृदय व तत्पश्चात् समाज में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन संभव है। अहिंसात्मक क्रांति के माध्यम से सत्य का आग्रह करने पर ही समाज में सत्य की स्थापना संभव है क्योंकि गाँधी के अनुसार पवित्र साध्य (सत्य) की प्राप्ति हेतु प्रयुक्त साधन भी ही होना चाहिए। इस प्रकार सत्य वह वृक्ष है जिसका बीज अंहिसा है।

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक निर्धारित है।

27. योग का अर्थ और प्रकार बताते हुए सकारात्मक जीवन पद्धति और तनाव प्रबन्धन हेतु इसके महत्त्व को दर्शाइए।

उत्तरः–योग का शाब्दिक अर्थ 'एकता' अथवा 'जोड़ना' है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना का एकीकरण एवं व्यावहारिक स्तर पर यह शरीर, मन, मस्तिष्क व आत्मा के संयोजन का साधन है। योग के प्रमुख 4 प्रकार है, जिनमें राजयोग प्रमुख हैं। महर्षि पतंजलि ने राजयोग को अष्टांग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान व समाधि) कहाँ है। योग आसन अभ्यास तक ही सीमित नहीं है, इसके अन्य प्रकारों में कर्म योग (निष्काम कर्म आधारित स्वकर्तव्यपालन), ज्ञान योग (बुद्धि का विकास) व भक्ति योग (श्राद्ध पूर्वक प्रार्थना, जप व मंत्र) सम्मिलित है।

शारीरिक व मानसिक उपचार योग के सबसे अधिक ज्ञात लाभ है, सद्भाव व एकीकरण के सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण यह अधिक प्रभावशाली है। तंत्रिका व अन्तः स्त्रावी तंत्र में संतुलन स्थापित करने के कारण योग अन्य सभी प्रणालियों को सीधे प्रभावित करता है। योग अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप, गठिया, पाचन व मनोविकार जैसी बिमारियों के लिए एक सफल चिकित्सा विकल्प है, साथ ही अस्त-व्यस्त जीवन शैली को सुव्यवस्थित जीवन शैली में परिवर्तित करने की प्रक्रिया भी है।

योग न केवल व्यक्ति को शारीरिक रूप से सुदृढ़ कर प्रतिरोधक क्षमता का वर्धन करता है, अपितु भावनात्मक एवं मानसिक स्पष्टता को बढ़ाकर व्यक्तित्व कों संगठित बनाता है, जो स्वस्थ व तनाव रहित जीवन का आधार है। इसी कारण, दयानन्द सरस्वती ने योग को 'आज की आवश्यकता' व 'कल की संस्कृति' की संज्ञा दी है।

28. भगवद्गीता के नीतिशास्त्र का प्रशासन में महत्त्व और प्रशासकों के जीवन में उपयोग बताइए?

उत्तरः– भारतीय संस्कृति द्वारा विश्व को दिए गये महानतम उपहारों में से एक वेदव्यास विरचित भगवद्गीता के 18 अध्याय प्रशासकों हेतु एक उत्कृष्ट आचार संहिता प्रस्तुत करती है। प्रसिद्ध श्लोक 'यदा यदा ही धर्मस्य.....', सांकेतिक रूप से व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति में 'नियंत्रण के उपाय' करने का सुझाव देता है। निष्काम कर्म, स्वधर्म एवं प्रवृत्ति में निवृत्ति' जैसी अवधारणाएँ प्रशासकों को कर्त्तव्य परायण बनाते हुए परिणाम की चिन्ता से मुक्त होकर तनाव रहित कार्य निष्पादन, कार्यात्मक संतुष्टि व कार्य, विशिष्ठीकरण को प्रोप्साहन देती है। 'योगः कर्मेशु कौशलम' के माध्यम से गीता में कार्य कुशलता को प्राप्त करने पर बल दिय गया है।

गीता में वर्णित पुरूषार्थ धर्म के अधीन अर्थोपार्जन का ही औचित्य प्रस्तुत कर संगठन को भ्रष्टाचार मुक्त रखने में सहायक है, साथ ही 'लोक संग्रह' का सिद्धान्त प्रशासक द्वारा 'सार्वजनिक हित आधारित निर्णयन' का आधार है। स्थितप्रज्ञ जैसे नैतिक, मापदण्ड कार्मिको में परिस्थितियों का दास' नहीं बनने व उनसे संघर्ष कर विजय पाने व सभी परिस्थितियों में समान रहने की प्रवृत्ति का विकास कर चुनौतीपूर्ण कार्यो को दक्षता से करने के योग्य बनाती है।

'समत्वं योग उच्चते' के माध्यम से गीता समभाव रखने हेतु प्रेरित करती है, साथ ही पारस्परिक सहयोग से ही 'श्रेयस' अर्थात् उद्देश्य प्राप्ति को संभव बताकर प्रशासन में 'समूह भावना' को अपरिहार्य सिद्ध करती है। इस प्रकार गीता का प्रत्येक अध्याय सुदृढ़ प्रशासन का मानक प्रस्तुत करता है।

29. काण्ट के नैतिक दर्शन का प्रशासनिक जीवन में महत्त्व तथा इसकी आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।

उत्तरः– जर्मन दार्शनिक काण्ट के दर्शन में बुद्धिवाद व अनुभववाद का समन्वय परिलक्षित होता है। यह दर्शन नैतिक नियमों को आत्मारोपित मानकर प्रशासन व कार्मिकों को स्व अनुशासित बनाता है व 'कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य' करने हेतु प्रेरित करता है, इसका सन्दर्भ 'विशुद्ध कर्त्तव्य चेतना' पर आधारित कर्म करने से है।

काण्टीय नीतिशास्त्र में वर्णित नैतिकता की पूर्वशर्ते कार्मिक के किसी कृत्य हेतु नैतिक उत्तरदायित्व को निर्धारण का मापदण्ड है। इसके आधार पर पुरस्कार अथवा दण्ड का निर्णयन किया जा सकता है। यह सिद्धान्त प्रशासक में वस्तुनिष्ठता व सार्वभौमिकता का समावेश करते हुए बौद्धिक निर्णयन के समय भावनाओं से विरक्त होने को प्रोत्साहित करती है।

काण्ट ने भावनाओं को निम्न कोटि की माना है जो इस सिद्धान्त की आलोचना का मुख्य आधार है। मनोवैज्ञानिक द्वेतवाद बुद्धि व भावना के पृथक्करण को असंभव मानता है साथ ही भावना शून्य हो जाने से व्यक्तिवाद की संभावनाएँ बन सकती है। काण्टीय सिद्धान्त अपवाद की उपस्थिति को नकारती है, जो इस सिद्धान्त को अत्यधिक कठोर व विरक्तिपूर्ण बना देता है। इसके अतिरिक्त आलोचकों के अनुसार इस सिद्धान्त में आकारवाद व मनोवैज्ञानिक सुखवाद (इच्छा-तृप्ति-संकल्प) संबंधित समस्याएँ परन्तु दैनिक व्यवहार को नियमित करने के लिए काण्ट द्वारा प्रतिपादित सूत्र वर्तमान समय में भी प्रांसगिक है।